Run by:*Maa Rewati Educational and Welfare Society*

MAA REWATI COLLEGE OF EDUCATION

(Recognised by:N.C.T.E. & Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur)
Jantipur Road, Badi Khairi, Mandla (M.P.)-481661
Phone: 0764-2291912,Website: www.mrcedu.com
Email: mrcedu1@gmail.com

Metric 3.2.1

3.2.1 Average number of research papers / articles per teacher published in Journals notified on UGC website during the last five years

3.2.1.1.

Number of research papers / articles per teacher published in the Journals notified on UGC website during the last five years

Institution

Response Institute attached the First page of the article/journals with seal and

signature of the Principal

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

IJESRR

International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
Email editor@ijesrr.org

Volume-6, Issue-2, May – 2021

www.ijesrr.org

शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की वार्षिक एवं सेमेस्टर सिस्टम की परीक्षा प्रणाली का समीक्षात्मक अध्ययन

अभिषेक चौबे
शोधार्थी

डॉ. बी.आर. बरोदे
शोध निर्देषक

सार

युवाओ को शिक्षित करने के लिए विश्वविद्यालयों की अलग–अलग प्रणालियाँ हैं। विश्वविद्यालयों में मुख्यत: दो प्रणालियाँ अपनाई जाती हैं – समे स्टर प्रणाली और वार्षिक प्रणाली। वार्षिक प्रणाली में, परीक्षा एक शिक्षाविद् वर्ष के बाद आयोजित की जाती है, जबकि समे स्टर प्रणाली में, परीक्षा पांच या छह महीने के बाद आयोजित की जाती है। वार्षिक और सेमेस्टर के बीच कई अंतर हैं। इसलिए, इस पेपर मे हम सेमेस्टर और वार्षिक प्रणाली के फायदे और नुकसान के बारे मे चर्चा करने जा रहे हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन छात्रों और शिक्षको के परिप्रेक्ष्य के बारे मे फायदे और नुकसान के सदं र्भ में सिस्टम को प्रस्तुत करने या अलग करने के लिए, वार्षिक और सेमेस्टर सिस्टम को अलग करने और दोनों प्रणालियों के आंतरिक मूल्य की पहचान करने के उद्देश्यों पर केंद्रित है। इस प्रकार, यह जानने के लिए कि वे किस प्रणाली में कुशलतापूर्क और प्रभावी ढंग से प्रदर्शन करते हैं।

मुख्यशब्द : वार्षिक प्रणाली, समे स्टर प्रणाली, गुणवत्ता शिक्षा, विश्वविद्यालय, पाठ्यक्रम परिचय

भारत में दो प्रकार की शैक्षिक प्रणालियाँ प्रचलित हैं, वार्षिक और सेमेस्टर प्रणाली। दोनो प्रणालियो की अपनी अनूठी विशेषताए हैं, इसलिए उन्हें अच्छा या बुरा कहना गलत होगा। शिक्षक और उच्च अधिकारी हमेशा नए विचारों को विकसित करने और सीखने के परिणामों के संदर्भ में शिक्षा को यथासभं व प्रभावी बनाने के लिए कई विकल्पों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। एक अकादमिक सेट अप में परिणाम का मतलब मानक और परिणाम के मामले मे समग्र उत्कृष्टता की उपलब्धियां हैं। समे स्टर प्रणाली एक शिक्षा प्रणाली है जिसका प्राथमिक सरोकार शिक्षण के बजाय सीखने में है। इस प्रणाली मे दृष्टिकोण शिक्षार्थी केंद्रित है न कि शिक्षक केंद्रित। समे स्टर प्रणाली का आदर्श वाक्य आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण (केएसए) विकसित करके छात्रो की क्षमता निर्माण के उद्देश्य से निरंतर संपीड़न और गहराई से सीखने पर जोर देना है। यद्यपि वार्षिक प्रणाली को लेकर शिक्षाविदो के बीच समे स्टर प्रणाली के पक्ष मे कई तर्क हैं, फिर भी खराब भौतिक और सचू ना

Principal
Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

Impact Factor – 7.675

ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Multidisciplinary International Research Journal

Peer-Reviewed, Refereed & Indexed Journal

NATIONAL CONFERENCE

February – 2020 SPECIAL ISSUE-CCXIII

UNDERSTANDING OF SELF

Chief Editor
Dr. Virag S. Gawande

Editor
Dr. Suhaskumar R. Patil

Convenor
Dr. Sushama M. Ganoje

Co-ordinator
Dr. Chhaya D. Mahale

Aadhar International Publications

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 700/-

Principal
Maa Rewati College of Education
Khairi Mandla (M.P.)

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February-2020

SPECIAL ISSUE-CCXIII(213)

UNDERSTANDING OF SELF

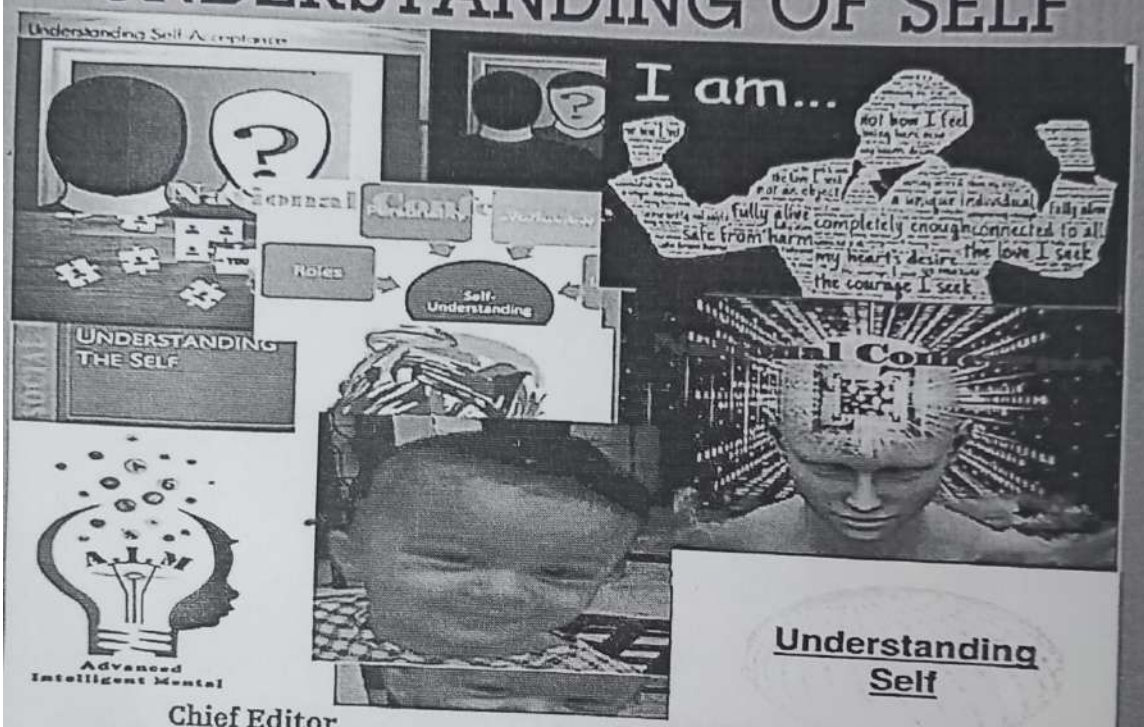

Advanced Intelligent Mental

Understanding Self

Chief Editor
Prof.Virag S. Gawande

Convenor
Dr. Sushama M. Ganoje

Editor
Dr. Suhaskumar Ruprao Patil

Co-ordinator
Dr. Chhaya Dilip Mahale

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Principal
Maa Rewati College of Education
Khairi Mandla (M.P.)

Scanned with OKEN Scanner

23	Understanding of Self, Being Wise, Overcoming Peer Pressure- **Dr. Medha Shekhar Moharil**	53-55
24	Understanding Self & Personality- **Dr. Narendra Narayan Daware**	56-57
25	Effect of Plyometric Training Programme on Explosive Power of Kabaddi Players- **Dr. Sanghpal W Narnaware**	58-59
26	Self Awareness: Life Skill That Matters- **Dr. Prashant Namdeorao Patil**	60-61
27	Role of the Teacher in developing concept of Self- **Dr. Jayshree A. Bhagat**	62-63
28	Importance Of Self-Esteem and Its Dimensions-**Atul N. Kamdi**	64-65
29	A Study of Understanding Emotional Intelligence of the Secondary School Teachers- **Dr. K.V. Deore**	66-68
30	A Study On Emotional Maturity And Scientific Temper Of M.Ed. Student In Nagpur Division **-Dr. Shalu A. Ghodeswar**	69-70
31	Sportsman's Spirit of Kho-Kho and Kabaddi Players- **Dr. Vivek Damodharrao Murkute**	71-72
32	Study Level of Tension among Various faculties-**Kuldeep R. Gond**	73-74
33	A Study of Boldness Behavioral Attitude of Various Position Kabaddi Players- **Santosh Kumar Sharma**	75-76
34	Study of Mental Toughness Of Academic Students- **Shailendra D. Giripunje**	77-78
35	"Effect of Perceived Parental handling on the development of self concept among adolescence." **-Dr. AlkaYelane (Kolhe)**	79-81
36	Understanding one's Values & Priorities **-Dr. Ukhwat Nausheen**	82-83
37	Impact Of Intelligence On Behaviourial Pattern Of University Students- **Mrs. Pranoti N. Gongale & Dr. G. K. Petkar**	84-85
38	Strategies for tolerance and handling attitude of Aggressive Adolescents- **Dr. Kanika Khare**	86-88
39	Understanding One's Personality- **Dr. Girish V. Vaidy**	89-90
40	Inculcate Strategies For Tolerance And Handling Attitude Of People – **Kavita M. Meshkar**	91-93
41	Understanding one's Strengths & Weaknesses- **Ms. Mohsena Shahin**	94-95
42	Understanding The Concept Of Self- **Dr. Manoj D. Raghamwar**	96-97
43	Emotional Intelligence of Secondary School Students in Relation to their Anxiety and Scholastic Achievement- **Dr. Rajiv K. Pancham & Dhiraj S. Masram**	98-101
44	Understanding Self Concept and its importance in Education- **Dr. Dilip R. Channawar**	102-103

Principal
Maa Rewati College of Education
Khairi, Mandla (M.P.)

Scanned with OKEN Scanner

IJAER, March-April-2022, Volume-11, Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

शिक्षा व्यवस्था में वार्षिक और सेमेस्टर प्रणाली का अध्ययन

अभिषेक चौबे
शोधार्थी

डॉ. बी.आर. बरोदे
शोध निर्देषक

सार

इस अध्ययन का उद्देश्य परीक्षा की वार्षिक प्रणाली और परीक्षा की सेमेस्टर प्रणाली में छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों के बीच अंतर को उजागर करना है। अध्ययन में पाठकों को परीक्षा की सेमेस्टर प्रणाली और परीक्षा की वार्षिक प्रणाली के माध्यम से छात्रों द्वारा प्राप्त अंक ग्रेडिंग में एक स्पष्ट अंतर दिखाई देगा। आज के प्रतिस्पर्धी चुनौतीपूर्ण माहौल में प्रत्येक छात्र प्रवेश, भर्ती और चयन प्रक्रिया में शीर्ष पर रहने के लिए अधिकतम अंक प्राप्त करना चाहता है। इस पेपर का उद्देश्य शिक्षकों के साथ–साथ छात्रों के दृष्टिकोण से इन दोनों प्रणालियों का महत्वपूर्ण विश्लेषण करना है।

मुख्यशब्द: *वार्षिक प्रणाली, सेमेस्टर प्रणाली.*

प्रस्तावना

पूरे विश्व में शिक्षा व्यवस्था साल भर एक जैसी नहीं रही है। नई अवधारणाओं के विकास और अनुभव के माध्यम से, शिक्षाविद विभिन्न व्यवहार्य तरीकों से ग्रंथों को पढ़ाने की संभावनाओं की जांच करते हैं। मायरोन ट्रिबस (1994) के अनुसार, शिक्षा प्रणाली में सुधार और परिवर्तन के लिए असंख्य प्रस्ताव / सुझाव हैं और अनंत संख्या में अच्छे विचार और शोध परिणाम हैं। लक्ष्य केवल उनमें से किसी एक को चुनना नही है, बल्कि व्यापक दृष्टिकोण और दृष्टिकोण रखना है जिसके भीतर हमें ज्ञात कई अच्छे कार्यों को क्रियान्वित करना है। सेमेस्टर प्रणाली की शुरूआत को इन जांचों का उत्पाद कहा जा सकता है। एक सेमेस्टर सिस्टम एक अकादमिक शब्द है। यह एक शैक्षणिक वर्ष का विभाजन है, जिस समय के दौरान एक कॉलेज कक्षाएं आयोजित करता है। यह स्कूलों और विश्वविद्यालयों में भी लागू हो सकता है। आमतौर पर, एक सेमेस्टर प्रणाली वर्ष को दो भागों या शर्तों में विभाजित करती है। कभी–कभी, यह तिमाही या तिमाही सेमेस्टर हो सकता है। सचमुच, सेमेस्टर का मंतलब छह महीने की अवधि है। भारत में आमतौर पर इस छह महीने की प्रणाली का पालन किया जाता है।

स्कूलों में हम वर्ष को छुट्टियों में और उसके आसपास दो (अक्सर तीन) प्रमुख परीक्षाओं के बीच विभाजित पाते हैं। भारत के केंद्रीय विश्वविद्यालय काफी समय से इसका पालन कर रहे हैं। वर्तमान में, असम में स्नातक महाविद्यालयों को भी सेमेस्टर प्रणाली से परिचित कराया गया है। हम पाते हैं कि आज दुनिया के अधिकांश देश लगातार सेमेस्टर सिस्टम पर स्विच कर रहे हैं। यह अनुमान है कि दुनिया की प्रसिद्ध वैश्विक अर्थव्यवस्थाएं संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और भारत हैं। प्रतियोगिताओं की दुनिया में, बड़े झगड़ों का एक क्षेत्र शिक्षा है। हम पाते हैं कि चीन वैश्विक बाजारों पर कब्जा करने के लिए हाथ से लड़ने के अलावा इस क्षेत्र में भी संयुक्त राज्य अमेरिका की जगह ले रहा है। वास्तव में, शिक्षा की दुनिया में सर्वोच्च स्थान पर कब्जा करने की कोशिश वास्तव में वैश्विक शिक्षा

Principal
Rewati College of Education
Bhandla (M.P.)

IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

दूरस्थ शिक्षा के आयाम

डॉ. बी.आर. बरोदे
शोध निर्देशक

श्रीमती मनीषा सोनी
शोधार्थी

सारांश

सामान्य पराम्परागत शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा के मध्य अंतर है। आधुनिक वैज्ञानिक जगत में मोबाइल, इन्टरनेट, कम्प्यूटर, दूरदर्शन एवं टेली कान्फ्रेसिंग के उपयोग में शिक्षा जगत में नये आयाम स्थापित किये हैं। विश्व व्यापी कोरोना महामारी के कारण घर–घर में ऑन लाइन शिक्षा अनिवार्य सी हो गई है। 'लॉकडाउन' लागू होने के फलस्वरूप स्कूल–कॉलेज बंद हो गए ।

दूरस्थ शिक्षा का विकास :–

बूस्टन के 1728 के राजपत्र में दूरस्थ शिक्षा के विकास के प्रमाण मिलते हैं। वर्ष 1856 में जर्मनी में दूरस्थ शिक्षा प्रारंभ हुई। अमेरिका में डाक द्वारा शिक्षण 1880 में प्रारंभ हुआ। भारत में सत्तर के दशक में दिल्ली में पत्राचार शिक्षा शुरू हुई। 1970 से 1980 के बीच अनेक राज्यों में पत्राचार शिक्षण संस्थायें प्रारंभ हुई। कामकाजी, दूरदराज ग्रामीण इलाकों, आर्थिक रूप से कमजोर तबकों के लिए दूरस्थ शिक्षा उपयोगी सिद्ध हुई। दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता को देखकर भारत सरकार ने 1985 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की। मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल की 1992 में स्थापना की गई। इस विश्वविद्यालय के जबलपुर संभाग में स्थापित अध्ययन केन्द्रों द्वारा उपाधि/स्नातकोत्तरीय पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किये जा रहे हैं।

'दूरस्थ शिक्षा अध्ययन के अनेक प्रकारों में से एक है, जो कक्षा में अपने छात्रों के साथ उपस्थित अध्यापकों के निरंतर तात्कालिक निरीक्षण से रहित है तथा जिनमें वे सभी शिक्षण

Principal
Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 8, No. - 9, Oct. - 2022, Special Issues Hindi

विकासशील देशों में साक्षरता दर में सुधार के लिए रणनीतियाँ

Kavita Bhawsar
M.A. (Sociology), B.Ed, M.A. (Education), Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- विकासशील देशों में साक्षरता दर में सुधार के लिए विभिन्न समन्वित और बहुआयामी रणनीतियों की आवश्यकता होती है। साक्षरता का विकास न केवल व्यक्तिगत सशक्तिकरण बल्कि समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

मुख्य बिंदु :-

1. शिक्षा का सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना :-
   - शिक्षा की पहुंच में सुधार के लिए ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में स्कूलों का निर्माण और पर्याप्त बुनियादी सुविधाओं का प्रावधान महत्वपूर्ण है।
   - सभी बच्चों, विशेषकर लड़कियों, अल्पसंख्यकों, और कमजोर समुदायों के लिए मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. शिक्षक प्रशिक्षण और गुणवत्ता में सुधार :-
   - शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार के लिए बेहतर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है। शिक्षकों को स्थानीय भाषाओं में पढ़ाने, प्रभावी शिक्षण विधियों का उपयोग करने, और छात्रों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
   - शिक्षकों के लिए बेहतर वेतन और काम करने की स्थितियों को सुनिश्चित करना ताकि वे अपनी भूमिकाओं को प्रभावी ढंग से निभा सकें।
3. शिक्षा सामग्री और पाठ्यक्रम सुधार :-
   - प्रासंगिक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील पाठ्यक्रम का विकास करना आवश्यक है, जो स्थानीय जरूरतों और समाज के विविधतापूर्ण स्वरूप को ध्यान में रखे।
   - डिजिटल शिक्षा सामग्री और ई-लर्निंग प्लेटफार्मों का उपयोग भी साक्षरता दर बढ़ाने में सहायक हो सकता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां शारीरिक रूप से स्कूल तक पहुंचना कठिन है।
4. साक्षरता कार्यक्रमों का संचालन :-
   - वयस्क साक्षरता कार्यक्रमों की स्थापना, जिसमें न केवल पढ़ने और लिखने की बुनियादी क्षमता सिखाई जाए, बल्कि वित्तीय साक्षरता, स्वास्थ्य साक्षरता, और डिजिटल साक्षरता को भी शामिल किया जाए।
   - समुदाय आधारित साक्षरता पहलें, जहां स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर साक्षरता के महत्व को प्रचारित और बढ़ावा दिया जाए।
5. सरकारी और गैर-सरकारी संगठन का सहयोग :-
   - सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों के बीच सहयोग से साक्षरता कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी और व्यापक बनाया जा सकता है।
   - निजी क्षेत्र, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, और अन्य स्टेकहोल्डर्स के साथ साझेदारी करके वित्तीय संसाधनों और तकनीकी सहायता को जुटाना आवश्यक है।
6. प्रोत्साहन और जागरूकता अभियान :-
   - साक्षरता के महत्व को बढ़ावा देने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है, जिससे समाज के सभी वर्ग शिक्षा की शक्ति को समझें।
   - साक्षरता को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार और प्रोत्साहन योजनाएं भी लागू की जा सकती हैं, जिससे लोगों में शिक्षा के प्रति उत्साह बढ़े।
7. निगरानी और मूल्यांकन :-
   - साक्षरता कार्यक्रमों की नियमित निगरानी और मूल्यांकन से उनकी प्रभावशीलता सुनिश्चित की जा सकती है। इससे नीति-निर्माताओं को आवश्यक सुधार करने में सहायता मिलती है।

इन रणनीतियों के माध्यम से विकासशील देशों में साक्षरता दर में महत्वपूर्ण सुधार लाया जा सकता है, जो व्यक्तिगत और सामुदायिक विकास के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करेगा।

1. प्रस्तावना (Introduction) :-

- साक्षरता का महत्व: साक्षरता का परिभाषा और महत्व।
- विकासशील देशों की वर्तमान स्थिति: विकासशील

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 8, No. - 9, Oct. - 2022, Special Issues Hindi

प्लास्टिक प्रदूषण का समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव

Sanjay Agrawal
M.A., B.Ed, M.Ed, Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- प्लास्टिक प्रदूषण समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर और व्यापक प्रभाव डाल रहा है। यह प्रदूषण न केवल समुद्री जीवन के लिए खतरनाक है, बल्कि पूरे पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ता है।

मुख्य बिंदु :-

1. समुद्री जीवन पर प्रभाव :-
   - प्लास्टिक कचरा, विशेष रूप से माइक्रोप्लास्टिक्स, समुद्री जीवों के लिए घातक है। मछलियाँ, कछुए, पक्षी, और अन्य समुद्री प्राणी गलती से प्लास्टिक को भोजन समझकर खा लेते हैं, जिससे उनकी मृत्यु हो सकती है।
   - प्लास्टिक में फंसे हुए समुद्री प्राणियों की संख्या बढ़ रही है, जो उनकी प्राकृतिक गतिविधियों, जैसे तैरना, खाना ढूंढना, और प्रजनन करना, को बाधित करता है।
2. भोजन श्रृंखला में प्रवेश :-
   - माइक्रोप्लास्टिक्स समुद्री खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे विषैले रसायन जीवों के शरीर में जमा हो जाते हैं। यह समस्या समुद्री प्राणियों से होते हुए मनुष्यों तक पहुँच सकती है, जो इस प्रदूषित भोजन का सेवन करते हैं।
   - प्लास्टिक प्रदूषण के कारण समुद्री खाद्य स्रोतों की गुणवत्ता और सुरक्षा को खतरा है।
3. पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन :-
   - प्लास्टिक समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को बिगाड़ता है, क्योंकि यह समुद्री जीवों के प्राकृतिक आवास को नुकसान पहुँचाता है।
   - कोरल रीफ्स, मैंग्रोव, और समुद्री घास जैसे संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र प्लास्टिक प्रदूषण से गंभीर रूप से प्रभावित होते हैं, जिससे इन क्षेत्रों में जैव विविधता घटती जा रही है।
4. रसायनिक प्रदूषण :-
   - प्लास्टिक के विघटन से हानिकारक रसायन समुद्र में घुल जाते हैं, जो समुद्री जल की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।
   - ये रसायन समुद्री जीवों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालते हैं और उनके प्रजनन और विकास में रुकावट पैदा कर सकते हैं।
5. मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव :-
   - समुद्री प्रदूषण से प्रभावित समुद्री जीवों का उपभोग करने से मानव स्वास्थ्य पर भी खतरा बढ़ जाता है। प्लास्टिक में मौजूद विषैले रसायन मानव शरीर में प्रवेश कर सकते हैं, जिससे स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
   - इसके अलावा, समुद्र तटों पर प्लास्टिक कचरे की उपस्थिति से पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
6. वैश्विक चुनौती और समाधान :-
   - प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक चुनौती है, जिसके समाधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सख्त नीतियों की आवश्यकता है।
   - प्लास्टिक के उपयोग को कम करना, पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना, और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए स्वच्छता अभियानों का आयोजन महत्वपूर्ण कदम हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण का समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव अत्यधिक नकारात्मक और चिंताजनक है। इसे रोकने के लिए तत्काल कार्रवाई और सतत प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि समुद्री जीवन और मानवता दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

1. प्रस्तावना (Introduction) :-

- समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की महत्ता: समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र (Marine Ecosystem) पृथ्वी के कुल पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें महासागर, समुद्र तट, कोरल रीफ, समुद्री पौधे, और अन्य जल निकाय शामिल हैं। यह पृथ्वी के जीवन चक्र को संतुलित रखने, जलवायु को नियंत्रित करने, और जीव विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 8, No. - 9, Oct. - 2022, Special Issues Hindi

असमानता कम करने में समावेशी शिक्षा की भूमिका

Diksha Kachhwaha
M.Com, B.Ed, M.Ed, Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- समावेशी शिक्षा असमानता को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका उद्देश्य हर बच्चे को, चाहे उनकी पृष्ठभूमि, क्षमताओं, या विशेष आवश्यकताएँ कुछ भी हों, एक समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। समावेशी शिक्षा शिक्षा प्रणाली में विविधता और समानता को प्रोत्साहित करती है, जिससे समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक असमानताओं को कम किया जा सकता है।

मुख्य बिंदु :-

1. सभी के लिए शिक्षा का अधिकार :-

○ समावेशी शिक्षा यह सुनिश्चित करती है कि सभी बच्चों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हो, विशेषकर वे बच्चे जो विकलांगता, गरीबी, लिंगभेद, या अन्य सामाजिक बाधाओं का सामना कर रहे हैं।

○ यह विभिन्न पृष्ठभूमि के बच्चों को समान अवसर प्रदान करती है, जिससे वे शिक्षा प्राप्त कर सकें और समाज में समान रूप से भाग ले सकें।

2. समाजीकरण और सहानुभूति का विकास :-

○ समावेशी कक्षाओं में विविधता के साथ सीखने से बच्चों में सहानुभूति, सहयोग, और सहिष्णुता का विकास होता है। यह उन्हें एक-दूसरे के प्रति अधिक समझ और सम्मान दिखाने के लिए प्रेरित करता है।

○ इससे सामाजिक सौहार्द बढ़ता है और भविष्य में असमानता के खिलाफ एक मजबूत समाज की नींव रखी जाती है।

3. आर्थिक असमानता का उन्मूलन :-

○ समावेशी शिक्षा आर्थिक असमानता को कम करने में सहायक है क्योंकि यह सुनिश्चित करती है कि गरीब और हाशिए पर रहने वाले बच्चों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

○ शिक्षा के माध्यम से इन बच्चों को बेहतर जीवन जीने के अवसर मिलते हैं, जिससे गरीबी का दुष्चक्र टूट सकता है और आर्थिक असमानता को कम किया जा सकता है।

4. विकलांगता और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों का समावेश :-

○ समावेशी शिक्षा विकलांगता या विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को भी मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करती है, जिससे उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा मिल सके।

○ यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी बच्चे को उसकी क्षमता या शारीरिक स्थिति के कारण शिक्षा से वंचित न किया जाए।

5. लिंग आधारित असमानता का समाधान :-

○ समावेशी शिक्षा लड़कियों और महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देती है, जिससे लिंग आधारित असमानता को कम किया जा सकता है।

○ यह शिक्षा प्रणाली को अधिक लिंग-संवेदनशील बनाती है, जिससे लड़कियों को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने और समाज में अपनी भूमिका निभाने के लिए सक्षम बनाया जा सकता है।

6. समग्र और टिकाऊ विकास :-

○ समावेशी शिक्षा से समाज के सभी वर्गों के लोग साक्षर और जागरूक बनते हैं, जिससे समग्र और टिकाऊ विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

○ यह शिक्षा के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को समाप्त करने की दिशा में एक स्थायी समाधान प्रदान करती है।

समावेशी शिक्षा असमानता को कम करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। यह एक न्यायसंगत, सहानुभूतिपूर्ण, और समृद्ध समाज के निर्माण में सहायक है, जहां सभी लोगों को समान अवसर और सम्मान प्राप्त होता है।

समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो सभी बच्चों, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले और विकलांग बच्चों, को एक समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है। यह प्रणाली समाज में मौजूद सामाजिक, आर्थिक, और

Principal
Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 8, No. - 9, Oct. - 2022, Special Issues Hindi

डिजिटल साक्षरता की भूमिका ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता को कम करने में

Meenu Dhangar
M.Com, B.Ed, M.Ed, Assistent Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla

सारांश :- वर्तमान डिजिटल युग में, ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता एक गंभीर समस्या बनी हुई है, जिसे पारंपरिक शैक्षिक उपायों से पूरी तरह से संबोधित नहीं किया जा सका है। इस शोध पत्र में, डिजिटल साक्षरता की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया है, और इसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता को कम करने की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। डिजिटल साक्षरता से तात्पर्य कंप्यूटर, इंटरनेट, और अन्य डिजिटल उपकरणों का प्रभावी उपयोग करने की क्षमता से है। यह क्षमता छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा, शैक्षिक संसाधनों, और व्यक्तिगत अध्ययन सामग्री तक पहुँच प्रदान करती है, जो पारंपरिक शिक्षा की सीमाओं को पार करने में सहायक होती है।

शोध में पाया गया कि डिजिटल साक्षरता ग्रामीण शिक्षा को कई तरीकों से लाभ पहुँचाती है, जैसे कि ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की उपलब्धता, बेहतर शैक्षिक सामग्री तक पहुँच, और शिक्षण विधियों में सुधार। हालांकि, इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, प्रशिक्षित शिक्षक, और वित्तीय सहायता की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता को अपनाने में कई चुनौतियाँ हैं, जिनमें सीमित इंटरनेट कनेक्टिविटी, वित्तीय बाधाएँ, और प्रशिक्षण की कमी शामिल हैं।

इस प्रकार, डिजिटल साक्षरता एक महत्वपूर्ण उपकरण हो सकती है जो ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता को कम करने में सहायक हो सकती है, लेकिन इसके लिए समुचित योजना और समर्थन की आवश्यकता है। सही दिशा में प्रयास किए जाने पर, यह डिजिटल साक्षरता शैक्षिक अवसरों की समानता को बढ़ावा दे सकती है और ग्रामीण शिक्षा में सुधार कर सकती है।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना।
2. डिजिटल साक्षरता और शैक्षिक असमानता।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता।
4. डिजिटल साक्षरता के लाभ।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ।
6. निष्कर्ष।

1. प्रस्तावना :- आज के डिजिटल युग में, तकनीकी प्रगति ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक बदलाव लाया है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां शैक्षिक संसाधनों की कमी है, डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य यह जानना है कि डिजिटल साक्षरता किस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता को कम करने में सहायक हो सकती है।

2. डिजिटल साक्षरता और शैक्षिक असमानता (Digital Literacy and Educational Inequality) :-

डिजिटल साक्षरता :- यह कंप्यूटर, इंटरनेट, और अन्य डिजिटल उपकरणों का प्रभावी उपयोग करने की क्षमता है। इसमें वेबसाइटों का उपयोग, ई-मेल भेजना, ऑनलाइन खोज करना, और डिजिटल सुरक्षा शामिल है।

शैक्षिक असमानता :- यह स्थिति तब होती है जब विभिन्न क्षेत्रों या समूहों के बीच शिक्षा के अवसरों, गुणवत्ता, और संसाधनों में अंतर होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, इस असमानता का सामना अक्सर निम्नलिखित कारणों से किया जाता है।

- सीमित शैक्षिक संसाधन और सामग्री।
- अपर्याप्त प्रशिक्षित शिक्षक।
- भौगोलिक और भौतिक बाधाएँ।

3. ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता (Educational Inequality in Rural Areas) :-

ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता की प्रमुख समस्याएँ हैं।

- संसाधनों की कमी :- सरकारी स्कूलों में पुस्तकें, लैब उपकरण, और आधुनिक तकनीक की कमी।
- शिक्षकों की कमी :- प्रशिक्षित और अनुभवी

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

"उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में अभिरूचि तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

डॉ. बी. आर. बरोदे — निर्देशक

श्रीमति वंदना शुक्ला — शोधार्थी

शोध सार –

प्रस्तुत कार्य का मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में अभिरूचि तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में जबलपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11 के 45 विद्यार्थियों का चयन किया गया। जिसमें 20 छात्र तथा 25 छात्राओं का चयन किया गया। विद्यार्थियों में विज्ञान में अभिरूचि को जानने के लिए डॉ. एल.एन. दुबे तथा डॉ. अर्चना द्वारा निर्मित विज्ञान अभिरूचि परीक्षण का प्रशासन किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि जानने के लिए विद्यार्थियों के कक्षा 10 के वार्षिक मूल्यांकन का परीक्षण किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि विज्ञान में अभिरूचि तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तावना –

विद्यार्थियों की शिक्षा में विज्ञान विषय का विशेष महत्व होता है। विद्यार्थी अपने चारों तरफ विज्ञान के नए–नए अविष्कारों से भलीभांति परिचित रहता है। घर में तथा बाहर के परिवेश में वह विज्ञान के सम्पर्क में लगातार रहता है। नई वस्तुओं, खिलौनों, उपकरणों आदि को जानने की उत्सूकता उसमें विज्ञान के प्रति अभिरूचि को जागृत करती है। विज्ञान के द्वारा विद्यार्थी में सही ढंग से विचार करने तथा नए विचारों का उपयोग करने की क्षमता विकसित होती है। विद्यार्थी की विज्ञान में अभिरूचि से उसके वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी में क्रमबद्ध तरीके से कार्य क रने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है एवं विद्यार्थी तार्किक ढंग से विचार प्रस्तुत करने में सक्षम होता है। वह तर्कपूर्ण व न्यायसंगत तरीके से तथ्यों की जांच करने योग्य हो जाता है।

विज्ञान में अभिरूचि को बढ़ाने के लिए विद्यालयों में आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए जैसे– विद्यालयों में विज्ञान से सम्बंधित प्रदर्शनी आयोजित की जाए जिसमें विज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों एवं प्रयोग को समावेशित किया जाए। विद्यालयों में उपयुक्त प्रयोगशाला एवं आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था की जाए क्योंकि इनके द्वारा विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति अभिरूचि उत्पन्न होती है। दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली की भूमिका पर परिचर्चा आयोजित विद्यार्थी में अभिरूचि उत्पन्न हो।

इस शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विज्ञान में अभिरूचि के सम्बंध में यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि अभिरूचि तथा विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि में क्या तुलनात्मक प्रभाव है विज्ञान में

अभिरूचि से शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पडता है या नकारात्मक। प्राप्त निष्कर्षो के माध्यम से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों आदि को महत्वपूर्ण सुझाव दिए जा सकेंगे।

प्रस्तुत शोधकार्य को दिशा प्रदान करने में निम्नांकित पूर्व अनुसंधानों का विशेष योगदान रहा है –

Principal
Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

Radiant Group of Institutions, Jabalpur (M.P.), India
Indian Economic Association
Social Science & Management Welfare Association
International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand
& Social Studies Teacher Indonesia Forum

Two Days International Conference on Multidisciplinary Research in Education, Employment & Entrepreneurship Development

VENUE : Hotel Lovely Inn, Jabalpur (M.P.), INDIA
DATE : 1-2 May, 2022

Certificate

This is to certify that Prof/Dr/Shri/Mrs./Mr./Ku.

Kavita Bhawsar

University / College / Organization

Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

Registration No. 286 Subject Education

in the International Conference ICMREEED-2022. Jointly organized by Radiant Group of Institutions, Indian Economic Association, Social Science & Management Welfare Association, International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand & Social Studies Teacher Indonesia Forum.

He / She successfully attended / Participated / Presented a paper entitled

The Impact of Plastic Pollution on Marine Ecosystems

Dr. Corina Sujdea Vice Chancellor International Internship University, Educator, Romania	Prof. Rommel V. Tabula President International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand	Dr. Eni Kuswati Resources Person Ministry of Education & Culture in Indonesia for Sekolah Penggerak, Superintendent Authorities Education, Kudus Central Java, Indonesia	Nitin Basedia Director Radiant Group of Institutions Jabalpur (M.P.) India	Prof. (Dr.) D. Vishwakarma President - Youth Economic Association Secretary - Social Science & Management Welfare Association E.C. Member of Indian Economic Association In charge of Madhya Pradesh

Principal
College of Education
Rewa (M.P.)

Sponsored By

International SAS Scientific Research Solution

Email : issmwa.in@gmail.com, iceeed2022@gmail.com, Website : www.issmwa.com, Cell : 8305476707, 9770123251, 7509086613

Radiant Group of Institutions, Jabalpur (M.P.), India
Indian Economic Association
Social Science & Management Welfare Association
International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand
& Social Studies Teacher Indonesia Forum

Two Days International Conference on Multidisciplinary Research in Education, Employment & Entrepreneurship Development

VENUE : Hotel Lovely Inn, Jabalpur (M.P.), INDIA
DATE : 1-2 May, 2022

Certificate

This is to certify that Prof/Dr/Shri/Mrs./Mr./Ku.
Sanjay Agarwal
University / College / Organization
Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)
Registration No. 287 Subject Education
in the International Conference ICMREEED-2022. Jointly organized by Radiant Group of Institutions, Indian Economic Association, Social Science & Management Welfare Association, International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand & Social Studies Teacher Indonesia Forum.

He / She successfully attended / Participated / Presented a paper entitled
Strategies for Improving Literacy Rates in Developing Countries

Dr. Corina Sujdea
Vice Chancellor
International Internship University, Educator, Romania

Prof. Rommel V. Tabula
President
International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand

Dr. Eni Kuswati
Resources Person Ministry of Education & Culture in Indonesia for Sekolah Penggerak, Superintendent Authorities Education, Kudus, Central Java, Indonesia

Nitin Basedia
Director
Radiant Group of Institutions, Jabalpur (M.P.), India

Prof. (Dr.) D. Vishwakarma
President - Youth Economic Association
Secretary - Social Science & Management Welfare Association
E.C. Member of Indian Economic Association & In-charge of Madhya Pradesh

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

Sponsored By

International SRS Scientific Research Solution

Email : issmwa.in@gmail.com, iceeed2022@gmail.com, Website : www.issmwa.com, Cell : 8305476707, 9770123251, 7509086613

Teacher Indonesia Forum

ST. ALOYSIUS' INSTITUTE OF TECHNOLOGY, JABALPUR

International Conference

on

Role of Science Education & Technology in Making India Self-Reliant & Globally Competent (ICR-SET-2023)

3rd - 4th March 2023

In Collaboration With

WORLD LEADERSHIP ACADEMY, KIIT BHUBANESHWAR

SOCIETY FOR TECHNOLOGICALLY ADVANCED MATERIALS OF INDIA, NAGPUR

CERTIFICATE

This is to certify that Prof. / Dr. / Mr. / Mrs. Manisha Soni of Dr. Radhakrishnan College of Education has participated / presented poster / presented a paper titled "Success of distance education in tribal areas with reference to Mandla district" during this conference.

Convenor
Dr. (Mrs.) Rashmi Jaiswal
Assistant Professor,
Department of Science Education, SAIT, Jabalpur

Program Chair
Dr. Pradeep Kumar Mallick
Associate Professor, School of Computer Engineering
KIIT University, Odisha

Program Chair
Dr. Kishore Rewalkar
Principal, VV College, Samudarpur
Secretary, TAMI

Chair Person
Dr. (Mrs.) Renu Pandey
Principal
SAIT, Jabalpur

Patron
Dr. Fr. Davis George
Director
SAIT, Jabalpur

(Established by the Madhya Pradesh State Legislature Act No. 26/2018 & Recognized by University Grants Commission New Delhi)

SARDAR PATEL UNIVERSITY BALAGHAT (M.P.)

School of Education
Sardar Patel College of Technology
School of Commerce & Management

Jointly Organizing

NATIONAL SEMINAR

On

NATIONAL EDUCATION POLICY : 2020

Certificate

This is to certify that (Dr./Mr./Ms.): MANISHA SONI

from SPU, BALAGHAT has participated and Presented his/her research paper

entitled RESEARCH SCHOLAR (PAPER PRESENTATION)

In National Seminar on National Education Policy - 2020 "Challenges and Opportunities for Youth Empowerment" on 20th May, 2022 held at Sardar Patel University, Balaghat (M.P.)

Co-ordinator

Chief Co-ordinator

Principal
Rewati College of Education

Convener

Radiant Group of Institutions, Jabalpur (M.P.), India
Indian Economic Association
Social Science & Management Welfare Association
International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand
& Social Studies Teacher Indonesia Forum

Two Days International Conference on Multidisciplinary Research in Education, Employment & Entrepreneurship Development

VENUE : Hotel Lovely Inn, Jabalpur (M.P.), INDIA
DATE : 1-2 May, 2022

Certificate

This is to certify that Prof/Dr/Shri/Mrs./Mr./Ku.

Diksha Kachhwaha

University / College / Organization

Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

Registration No. 288 Subject Education

in the International Conference ICMREEED-2022. Jointly organized by Radiant Group of Institutions, Indian Economic Association, Social Science & Management Welfare Association, International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand & Social Studies Teacher Indonesia Forum.

He / She successfully attended / Participated / Presented a paper entitled

The Role of Inclusive Education in Reducing Inequality

Dr. Corina Sujdea Vice Chancellor International Internship University, Educator, Romania	Prof. Rommel V. Tabula President International Society of Teachers, Administrators and Researchers Bangkok, Thailand	Dr. Eni Kuswati Resources Person Ministry of Education & Culture in Indonesia for Sekolah Penggerak, Superintendent Authorities Education, Kudus, Central Java, Indonesia	Nitin Basedia Director Radiant Group of Institutions, Jabalpur (M.P.), India	Prof. (Dr.) D. Vishwakarma President - Youth Economic Association Secretary - Social Science & Management Welfare Association E.C. Member of Indian Economic Association & In charge of Madhya Pradesh

Sponsored By

Principal
Rewati College of Education

International
SRS Scientific Research Solution

Email : issmwa.in@gmail.com, iceeed2022@gmail.com, Website : www.issmwa.com, Cell : 8305476707, 9770123251, 7509086613

ISSN: 2278-9677

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS & EDUCATION RESEARCH

Published By: Advance Research Educational Society (ARES)

PAPER PUBLICATION CERTIFICATE

May - 2021 Vol. - 6 Issue – 2

THIS CERTIFICATE IS AWARDED TO:

Prof/Dr. /Mr. /Ms. अभिषेक चौबे *For the Research Paper Entitled:*

शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की वार्षिक एवं सेमेस्टर सिस्टम की परीक्षा प्रणाली का समीक्षात्मक अध्ययन

www.ijaer.org **Publication in IJAER** *Editor-in-Chief*

ISSN: 2278-9677

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS & EDUCATION RESEARCH

Published By: Advance Research Educational Society (ARES)

PAPER PUBLICATION CERTIFICATE

April - 2022 Vol. - 11 Issue – 2

THIS CERTIFICATE IS AWARDED TO:

Prof/Dr. /Mr. /Ms. अभिषेक चौबे *For the Research Paper Entitled:*

शिक्षा व्यवस्था में वार्षिक और सेमेस्टर प्रणाली का अध्ययन

www.ijaer.org **Publication in IJAER** *Editor-in-Chief*

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 9, No. - 5, June - 2023

माइक्रो टीचिंग और समावेशी शिक्षा: एक विश्लेषण

Kavita Bhawsar
M.A. (Sociology), B.Ed, M.A. (Education), Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- माइक्रो टीचिंग एक शिक्षण पद्धति है, जिसमें शिक्षक अपने शिक्षण कौशल को निखारने के लिए छोटे-छोटे सत्रों में पढ़ाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक को अपने शिक्षण विधियों का मूल्यांकन करने और उनमें सुधार करने का अवसर प्रदान करना है। माइक्रो टीचिंग में शिक्षक एक छोटे समूह के सामने पढ़ाते हैं और फिर उनके प्रदर्शन का विश्लेषण किया जाता है। यह प्रक्रिया शिक्षकों को अपने शिक्षण में न केवल आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करती है, बल्कि उन्हें अपने शिक्षण कौशल को अधिक प्रभावी बनाने के लिए मार्गदर्शन भी देती है।

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी छात्रों को समान शिक्षा का अवसर प्रदान करना है, चाहे उनकी सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक या मानसिक स्थिति कैसी भी हो। यह एक ऐसा शिक्षण दृष्टिकोण है, जो विविधता को स्वीकार करता है और विभिन्न प्रकार के छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षण विधियों को अनुकूलित करता है। समावेशी शिक्षा में सभी छात्रों को एक सामान्य कक्षा में शिक्षित किया जाता है, जिसमें उन्हें समान रूप से भाग लेने और सीखने का अवसर मिलता है।

माइक्रो टीचिंग और समावेशी शिक्षा के बीच एक गहरा संबंध है। माइक्रो टीचिंग के माध्यम से शिक्षक समावेशी शिक्षा के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं। वे विभिन्न प्रकार के छात्रों की जरूरतों को समझ सकते हैं और उन्हें कैसे संबोधित करना है, इसका अभ्यास कर सकते हैं। इस प्रकार, माइक्रो टीचिंग शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों को प्रभावी ढंग से लागू करने में सहायता कर सकती है, जिससे सभी छात्रों को बेहतर शिक्षा प्राप्त हो सके।

परिचय :- समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करती है। इसका उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी की विशेष जरूरतों को समझना और उनका समावेशी तरीके से समर्थन करना है। माइक्रो टीचिंग, जो कि एक छोटे समूह में शिक्षण की प्रक्रिया है, समावेशी शिक्षा के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता है। इस शोध पत्र में, हम माइक्रो टीचिंग के प्रभाव, इसके लाभ और समावेशी शिक्षा में इसके उपयोग को विस्तार से समझेंगे।

माइक्रो टीचिंग की परिभाषा और महत्व :- माइक्रो टीचिंग एक शिक्षण विधि है जिसमें शिक्षक छोटे समयावधि के लिए एक सीमित समूह में पाठ पढ़ाते हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों को सुधारने और उनकी प्रभावशीलता को जांचने का अवसर प्राप्त करते हैं। यह एक प्रकार की "प्रैक्टिस सत्र" होती है जो शिक्षकों को उनकी तकनीकों को बेहतर बनाने की अनुमति देती है।

समावेशी शिक्षा: एक परिचय :- समावेशी शिक्षा का उद्देश्य ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जिसमें सभी विद्यार्थियों को समान अवसर और समर्थन मिले, चाहे उनकी शारीरिक या मानसिक स्थिति कैसी भी हो। इसका मतलब है कि विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थी एक ही कक्षा में शिक्षा प्राप्त करें और उनके लिए व्यक्तिगत समर्थन उपलब्ध हो।

माइक्रो टीचिंग और समावेशी शिक्षा का संबंध :- माइक्रो टीचिंग समावेशी शिक्षा के लिए एक प्रभावी उपकरण हो सकता है क्योंकि यह शिक्षकों को उनके शिक्षण कौशल को छोटे, नियंत्रित समूहों में सुधारने का अवसर प्रदान करता है। इसका उपयोग विशेष रूप से उन शिक्षकों के लिए लाभकारी हो सकता है जो समावेशी कक्षाओं में काम कर रहे हैं।

1. विशेष आवश्यकताओं की समझ: माइक्रो टीचिंग के दौरान शिक्षक विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों के साथ काम कर सकते हैं और उनकी विशेष आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। इससे शिक्षक अधिक संवेदनशील और अनुकूलित शिक्षण विधियों को लागू कर सकते हैं।

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 9, No. - 5, June - 2023

नया शिक्षा नीति: एक विश्लेषण

Sanjay Agrawal
M.A., B.Ed, M.Ed, Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- नई शिक्षा नीति (नई शिक्षा नीति 2020) भारत के शिक्षा क्षेत्र में एक ऐतिहासिक और व्यापक सुधार लाने का प्रयास करती है। यह नीति प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के हर स्तर पर बदलाव की रूपरेखा प्रस्तुत करती है, जिसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, लचीला और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाना है।

मुख्य बिंदु :-

1. स्कूली शिक्षा में बदलाव :-

- 10+2 संरचना को बदलकर 5+3+3+4 की नई संरचना अपनाई गई है, जिसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पर जोर दिया गया है।
- मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया गया है, खासकर प्राथमिक स्तर पर।
- स्कूली पाठ्यक्रम में व्यावहारिक और कौशल आधारित शिक्षा का समावेश किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा मिले।

2. उच्च शिक्षा में सुधार :-

- उच्च शिक्षा के लिए एकल नियामक निकाय की स्थापना की गई है।
- मल्टीपल एंट्री और एग्जिट विकल्पों की शुरुआत की गई है, जिससे छात्र अपनी शिक्षा को बीच में छोड़ने या फिर से शुरू करने के लिए स्वतंत्र होंगे।
- उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना की गई है।

3. समावेशी शिक्षा :-

- सभी वर्गों के विद्यार्थियों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं।
- लड़कियों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, और दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष योजनाएँ और स्कॉलरशिप की शुरुआत की गई है।

4. शिक्षक प्रशिक्षण और विकास :-

- शिक्षकों के प्रशिक्षण और विकास के लिए व्यापक योजना बनाई गई है। उन्हें सतत शिक्षा और पेशेवर विकास के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों के मानकों को सुधारने और गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण सुनिश्चित करने के लिए कड़े उपाय किए गए हैं।

5. डिजिटल शिक्षा और तकनीकी का उपयोग :-

- डिजिटल शिक्षा के महत्व को मान्यता दी गई है और इसके लिए प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया है।
- ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के उपाय किए गए हैं।

6. स्वायत्तता और अकादमिक लचीलापन :-

- उच्च शिक्षा संस्थानों को अधिक स्वायत्तता प्रदान की गई है, जिससे वे अपने पाठ्यक्रम और मूल्यांकन में नवाचार कर सकें।
- अकादमिक क्रेडिट बैंक जैसी अवधारणाओं को लागू किया गया है, जिससे छात्रों को अपनी शिक्षा को अधिक लचीले ढंग से प्रबंधित करने में मदद मिलेगी।

नई शिक्षा नीति का लक्ष्य भारत को एक वैश्विक शिक्षा हब के रूप में स्थापित करना है, जहां सभी को गुणवत्तापूर्ण, समावेशी, और सस्ती शिक्षा उपलब्ध हो। यह नीति एक अधिक ज्ञान-वर्धक, नवाचार-प्रेरित और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

परिचय :- भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए 2020 में नई शिक्षा नीति (NEP) की घोषणा की गई थी। यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने, उसकी गुणवत्ता को बढ़ाने और उसे वैश्विक मानकों के अनुरूप लाने के उद्देश्य से बनाई गई है। इस शोध पत्र में हम नई शिक्षा नीति के मुख्य पहलुओं, उद्देश्यों, और इसके संभावित प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण करेंगे।

नई शिक्षा नीति के उद्देश्य :- नई शिक्षा नीति (NEP) का मुख्य उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को नया रूप देना है ताकि यह अधिक समावेशी, गुणवत्ता वाली, और व्यावहारिक हो सके। इसके प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 9, No. - 5, June - 2023 | 2023

प्रारंभिक बचपन के तनाव का मस्तिष्क विकास पर प्रभाव

Diksha Kachhwaha
M.Com, B.Ed, M.Ed, Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- प्रारंभिक बचपन का तनाव मस्तिष्क के विकास पर गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है। इस चरण में मस्तिष्क अत्यधिक संवेदनशील होता है और यह विभिन्न आंतरिक और बाहरी कारकों से प्रभावित होता है, जिनमें से तनाव एक प्रमुख कारक है।

मुख्य बिंदु :-

1. मस्तिष्क संरचना पर प्रभाव :-
- तनाव हार्मोन, जैसे कि कोर्टिसोल, मस्तिष्क के विकासशील क्षेत्रों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं, विशेष रूप से हिप्पोकैम्पस, एमिग्डाला, और प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स पर। ये क्षेत्र स्मृति, भावनात्मक नियंत्रण, और संज्ञानात्मक कार्यों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।
- अत्यधिक और निरंतर तनाव मस्तिष्क की संरचना में परिवर्तन कर सकता है, जिससे भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

2. संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली पर प्रभाव :-
- तनाव के कारण बच्चों में सीखने, ध्यान केंद्रित करने, और समस्या सुलझाने की क्षमता में कमी आ सकती है।
- दीर्घकालिक तनाव बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है, जिससे वे शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं।

3. भावनात्मक और व्यवहारिक प्रभाव :-
- प्रारंभिक बचपन में तनाव के कारण बच्चों में चिंता, अवसाद, और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है।
- बच्चों में आक्रामकता, चिड़चिड़ापन, और सामाजिक संबंधों में कठिनाई जैसी व्यवहारिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

4. लचीलापन और सकारात्मक हस्तक्षेप :-
- हालांकि प्रारंभिक बचपन का तनाव हानिकारक हो सकता है, लेकिन सही समय पर हस्तक्षेप और समर्थन बच्चों को इन नकारात्मक प्रभावों से उबरने में मदद कर सकता है।
- सकारात्मक पारिवारिक वातावरण, भावनात्मक समर्थन, और प्रारंभिक शैक्षिक हस्तक्षेप बच्चों में लचीलापन बढ़ाने और मस्तिष्क विकास को स्वस्थ रखने में सहायक होते हैं।

5. दीर्घकालिक परिणाम :-
- प्रारंभिक बचपन के तनाव के दीर्घकालिक प्रभाव वयस्कता में भी देखे जा सकते हैं, जैसे कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, कमजोर सामाजिक कौशल, और कामकाजी जीवन में चुनौतियाँ।
- इसलिए, प्रारंभिक हस्तक्षेप और बच्चों के तनाव को कम करने के लिए परिवार, स्कूल, और समुदाय का सामूहिक प्रयास महत्वपूर्ण है।

इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक बचपन का तनाव मस्तिष्क विकास पर व्यापक और दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है। इसके लिए समय पर पहचान और सकारात्मक हस्तक्षेप महत्वपूर्ण है ताकि बच्चों का विकास स्वस्थ और सकारात्मक दिशा में हो सके।

परिचय :- प्रारंभिक बचपन के तनाव का अध्ययन पिछले कुछ दशकों में एक महत्वपूर्ण अनुसंधान क्षेत्र बन गया है। बचपन के दौरान मस्तिष्क विकास की प्रक्रियाएँ अत्यंत संवेदनशील होती हैं और इस दौरान अनुभव किए गए तनावपूर्ण घटनाएँ जीवनभर के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल सकती हैं। इस शोध पत्र में, हम प्रारंभिक बचपन के तनाव का मस्तिष्क विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण करेंगे। हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि तनाव किस प्रकार मस्तिष्क की संरचना और कार्यक्षमता को प्रभावित करता है और इसके दीर्घकालिक परिणाम क्या हो सकते हैं।

Principal
Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 9, No. – 5, June - 2023 | 2023

शिक्षित और अशिक्षित अभिभावकों के कक्षा पांचवी में अध्ययनरत बालकों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन

Shivangi Patel
M.A. Sociology, B.Ed, M.Ed, Assistant Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षित और अशिक्षित अभिभावकों के बच्चों के नैतिक मूल्यों की तुलना और विश्लेषण करना है। नैतिक मूल्य, जो एक बच्चे के व्यक्तित्व और समाज के प्रति उसके दृष्टिकोण को आकार देते हैं, अभिभावकों के शैक्षिक स्तर से प्रभावित होते हैं। यह शोध विभिन्न आयामों पर केंद्रित है, जैसे कि ईमानदारी, सहानुभूति, अनुशासन, सामाजिकता, और जिम्मेदारी की भावना।

मुख्य बिंदु :-

1. शिक्षित अभिभावकों का प्रभाव :-

○ शिक्षित अभिभावक अपने बच्चों में नैतिक मूल्यों को विकसित करने में अधिक सक्षम होते हैं। वे शिक्षा के महत्व को समझते हैं और नैतिक शिक्षा पर जोर देते हैं।

○ शिक्षित अभिभावक बच्चों के साथ अधिक संवाद करते हैं, जिससे बच्चे में नैतिक विचारधारा और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

2. अशिक्षित अभिभावकों का प्रभाव :-

○ अशिक्षित अभिभावक अपने बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास में चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। हालांकि, वे भी नैतिकता को महत्व देते हैं, लेकिन उनके पास इस दिशा में मार्गदर्शन के लिए संसाधन और जागरूकता की कमी हो सकती है।

○ बच्चों का नैतिक विकास अक्सर पारिवारिक और सामाजिक अनुभवों पर निर्भर करता है, जिनमें कभी-कभी सीमित समझ के कारण कमियाँ हो सकती हैं।

3. नैतिक मूल्य और सामाजिक परिवेश :-

○ सामाजिक परिवेश और पारिवारिक वातावरण का बच्चों के नैतिक मूल्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षित अभिभावकों का सामाजिक दायरा और exposure बच्चों में नैतिकता की बेहतर समझ पैदा करता है।

○ अशिक्षित अभिभावकों के बच्चे भी नैतिकता सीखते हैं, लेकिन उनका शिक्षण अधिक पारंपरिक और सामाजिक अनुभवों पर आधारित होता है।

4. शिक्षा का नैतिक मूल्यों पर प्रभाव :-

○ शिक्षा बच्चों के नैतिक विकास को संरचनात्मक और संस्थागत रूप से बढ़ावा देती है। स्कूल में नैतिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों में नैतिकता के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना पैदा की जाती है।

○ शिक्षित अभिभावक अपने बच्चों को नैतिक शिक्षा के महत्व के प्रति अधिक सजग होते हैं और उन्हें नैतिक शिक्षा में शामिल गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अभिभावकों की शिक्षा का स्तर बच्चों के नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, नैतिकता की समझ केवल शिक्षा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह बच्चों के समग्र सामाजिक और पारिवारिक अनुभवों से भी प्रभावित होती है।

भूमिका :- शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का अर्जन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नैतिक मूल्य किसी समाज के आधारभूत सिद्धांत होते हैं, जो व्यक्तियों के आचरण को निर्धारित करते हैं। बालकों में नैतिक मूल्यों का विकास विशेषकर उनके प्रारंभिक जीवन में होता है और इसका प्रभाव उनके पूरे जीवन पर पड़ता है। अभिभावक, चाहे वे शिक्षित हों या अशिक्षित, बालकों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस शोध पत्र में, हम कक्षा पांचवी में अध्ययनरत बालकों के नैतिक मूल्यों पर उनके अभिभावकों की शिक्षा के प्रभाव का विश्लेषण करेंगे।

नैतिक मूल्य: परिभाषा और महत्व :- नैतिक मूल्य ऐसे आचरण के मानक होते हैं, जो समाज में सही और गलत के बीच अंतर को निर्धारित करते हैं। ये मूल्य व्यक्ति के आचरण, व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित करते हैं। सहानुभूति, ईमानदारी, सम्मान, दया, और सहिष्णुता जैसे नैतिक मूल्यों का विकास प्रारंभिक शिक्षा के दौरान

Principal
Maa Rewati College of Education

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 9, No. - 5, June - 2023

विश्वविद्यालयों में पुस्तकालयों की मार्केटिंग

Akansha Chourasia
B.Ed, B.Lib, M.Lib, Librarian, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- विश्वविद्यालयों में पुस्तकालयों की मार्केटिंग का उद्देश्य छात्रों, शिक्षकों, और शोधकर्ताओं के बीच पुस्तकालय सेवाओं और संसाधनों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और उनकी उपयोगिता को बढ़ावा देना है। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि पुस्तकालय न केवल शैक्षिक संसाधनों का एक महत्वपूर्ण केंद्र होते हैं, बल्कि अनुसंधान और ज्ञान के विस्तार में भी एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

मुख्य बिंदु :-

1. सेवाओं की पहचान और प्रचार :-

- पुस्तकालयों की सेवाओं जैसे कि ई-पुस्तकों, डेटाबेस, जर्नल्स, रेफरेंस सेवाओं और अनुसंधान सहायता का प्रचार करने के लिए विभिन्न मार्केटिंग रणनीतियों का उपयोग किया जाता है।
- छात्रों और संकाय के लिए कार्यशालाओं, ओरिएंटेशन सत्रों, और सूचना साक्षरता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है ताकि वे पुस्तकालय की सेवाओं का अधिकतम उपयोग कर सकें।

2. डिजिटल मार्केटिंग और सोशल मीडिया :-

- पुस्तकालयों की सेवाओं का प्रचार डिजिटल मार्केटिंग, वेबसाइट्स, और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से किया जाता है। इससे छात्रों और शिक्षकों को पुस्तकालय की नवीनतम सेवाओं और संसाधनों के बारे में जानकारी मिलती है।
- न्यूज़लेटर्स, ईमेल कैम्पेन, और ऑनलाइन वेबिनार्स का उपयोग भी छात्रों को पुस्तकालय से जोड़े रखने के लिए किया जाता है।

3. उपयोगकर्ता सहभागिता और फीडबैक :-

- उपयोगकर्ताओं के साथ नियमित संवाद और फीडबैक एकत्र करना पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता को सुधारने और उनकी उपयोगिता को बढ़ाने में मदद करता है।
- छात्रों और शिक्षकों की आवश्यकताओं के आधार पर सेवाओं को अनुकूलित किया जाता है, जिससे पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक प्रासंगिक और उपयोगी बनता है।

4. पार्टनरशिप और सहयोग :-

- विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के साथ सहयोग कर पुस्तकालय सेवाओं को उनके शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यों के साथ जोड़ने की कोशिश की जाती है।
- बाहरी संगठनों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग भी पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं को समृद्ध करता है।

5. आकर्षक स्थान और वातावरण :-

- पुस्तकालय के वातावरण को आकर्षक और प्रेरक बनाने के लिए प्रयास किए जाते हैं, जिससे छात्र और संकाय सदस्य वहां अधिक समय बिताने के लिए प्रेरित हों।
- अध्ययन कक्ष, डिजिटल मीडिया लैब्स, और शांत अध्ययन क्षेत्र जैसे सुविधाएं प्रदान कर पुस्तकालय को छात्रों के लिए एक उपयोगी और आरामदायक स्थान बनाया जाता है।

1. परिचय (Introduction) :- पुस्तकालयों की भूमिका और महत्व: विश्वविद्यालय पुस्तकालय केवल किताबें पढ़ने की जगह नहीं हैं, बल्कि यह ज्ञान का केंद्र होते हैं। पुस्तकालय छात्रों, शोधकर्ताओं, और फैकल्टी सदस्यों के लिए अनुसंधान, अध्ययन और जानकारी के आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं। इसके अलावा, डिजिटल युग में, पुस्तकालयों ने अपनी सेवाओं का विस्तार किया है, जिसमें ई-पुस्तकें, ऑनलाइन जर्नल्स, डेटाबेस, और शोध सहायता सेवाएं शामिल हैं।

यूनिवर्सिटी में लाइब्रेरी की उपयोगिता: एक विश्वविद्यालय पुस्तकालय का उद्देश्य छात्रों और शोधकर्ताओं को उनके अध्ययन और अनुसंधान में मदद करना है। यह एक ऐसा स्थान होता है जहाँ छात्र अपनी शैक्षणिक आवश्यकताओं के लिए आवश्यक सभी संसाधन पा सकते हैं। पुस्तकालय शिक्षण और सीखने के अनुभव को बढ़ाता है और शैक्षिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करता है।

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 9, No. – 5, June - 2023

ग्रामीण उपभोक्ता विपणन रणनीतियाँ: एक गहन विश्लेषण

Menu Dhangar
M.Com, B.Ed, M.Ed, Asstistent Professor, Maa Rewati College of Education, Mandla (M.P.)

सारांश :- ग्रामीण उपभोक्ताओं की विपणन रणनीतियों का गहन विश्लेषण करते समय, यह समझना महत्वपूर्ण है कि ग्रामीण बाजार शहरी बाजारों से काफी भिन्न होते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में उपभोक्ताओं की आवश्यकताएँ, प्राथमिकताएँ, और क्रय शक्ति अलग-अलग होती हैं, जिससे विपणन रणनीतियों को विशेष रूप से अनुकूलित करने की आवश्यकता होती है।

मुख्य बिंदु :-

1. उपभोक्ता व्यवहार की समझ: ग्रामीण उपभोक्ताओं का व्यवहार मुख्य रूप से उनकी सांस्कृतिक मान्यताओं, सामाजिक परंपराओं और आर्थिक स्थिति से प्रभावित होता है। वे आमतौर पर सामूहिक रूप से निर्णय लेते हैं, और उनके लिए मूल्य संवेदनशीलता अधिक महत्वपूर्ण होती है।
2. वितरण चैनल: ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक भौगोलिक विस्तार के कारण वितरण चैनल एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इसके लिए कंपनियों को मजबूत और कुशल वितरण नेटवर्क विकसित करना पड़ता है, जैसे कि ग्रामीण रिटेलरों, स्वयं सहायता समूहों और मोबाइल वैनों का उपयोग।
3. संचार रणनीतियाँ: ग्रामीण उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए स्थानीय भाषा और सरल संदेशों का उपयोग महत्वपूर्ण है। रेडियो, टेलीविजन और मोबाइल जैसे संचार माध्यमों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है।
4. मूल्य निर्धारण रणनीति: ग्रामीण बाजारों में उत्पादों की कीमतें उचित और सस्ती होनी चाहिए। इसके लिए, कंपनियों को उत्पादन लागत को कम करने और पैकेजिंग को छोटे और किफायती आकारों में प्रदान करने पर ध्यान देना चाहिए।
5. ब्रांड जागरूकता और विश्वास: ग्रामीण उपभोक्ता उन ब्रांडों पर अधिक भरोसा करते हैं जिन्हें वे जानते हैं और जिनका स्थानीय स्तर पर सकारात्मक प्रभाव रहा है। इसके लिए ब्रांड जागरूकता अभियान और सामुदायिक सहभागिता महत्वपूर्ण है।
6. प्रौद्योगिकी का उपयोग: डिजिटल मीडिया और मोबाइल फोन की पहुंच के साथ, कंपनियां अब ग्रामीण उपभोक्ताओं के साथ जुड़ने के लिए डिजिटल मार्केटिंग रणनीतियों का भी उपयोग कर रही हैं। ई-कॉमर्स प्लेटफार्म भी तेजी से ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय हो रहे हैं।

परिचय :- ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता व्यवहार और बाजार की संरचना के महत्व को देखते हुए, कंपनियों को इन क्षेत्रों में अपने उत्पादों और सेवाओं के लिए विशिष्ट विपणन रणनीतियाँ अपनानी पड़ती हैं। रूरल उपभोक्ताओं के सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक पहलुओं को समझना, उनके लिए उपयुक्त विपणन रणनीतियों का निर्माण करना आवश्यक है।

ग्रामीण उपभोक्ता का प्रोफाइल ग्रामीण उपभोक्ताओं की प्रोफाइल को समझने के लिए हमें उनकी आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर, सांस्कृतिक मान्यताओं, और खरीदारी के तरीकों को ध्यान में रखना चाहिए।

- आर्थिक स्थिति: ग्रामीण उपभोक्ता आमतौर पर कम आय वर्ग के होते हैं, जिनका खर्च अधिक सावधानी से किया जाता है।
- शिक्षा और जागरूकता: शिक्षा का स्तर और जागरूकता का स्तर शहरों की तुलना में कम हो सकता है, जिससे विपणन के तरीके भी अलग होते हैं।
- सांस्कृतिक मान्यताएँ और परंपराएँ: ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक और सांस्कृतिक मूल्यों का बड़ा प्रभाव होता है, जो उनके उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

ग्रामीण विपणन के चुनौतियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में विपणन करते समय कंपनियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

- भौगोलिक विविधता और वितरण के मुद्दे
- संचार के साधनों की कमी

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)